आचार्य देवसेन

जीवन-परिचय : देवसेन नाम के कई आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं। प्रस्तुत देवसेन वे हैं जिन्होंने विक्रम संवत् 990 में दर्शनसार नामक ग्रन्थ की रचना की थी। आचार्य देवसेन अपने समय के अच्छे विद्वान थे।

दर्शनसारादि के कर्ता देवसेन 9वीं शताब्दी के विद्वान थे।

रचना-परिचय : देवसेन के द्वारा रचित ग्रन्थ निम्न हैं—

1. **दर्शनसार :** इन्होंने धारा नगरी के पार्श्वनाथ मन्दिर में रहते हुए संवत् 990 माघ शुक्ल दशमी के दिन 'दर्शनसार' ग्रन्थ की रचना की है। दर्शनसार में अनेक मतों तथा संघों की उत्पत्ति आदि का वर्णन है। देवसेन ने पूर्वाचार्यकृत गाथाओं का संकलन किया है। इस लघुकाय ग्रन्थ में कुल 51 गाथाएँ हैं।

2. **भावसंग्रह :** इस ग्रन्थ में 701 गाथाएँ हैं। इसमें चौदह गुणस्थानों का अवलम्बन लेकर विविध विषयों का निरूपण किया गया है।

3. **आराधनासार :** यह ग्रन्थ 115 प्राकृत-गाथाओं में रचा गया है। इसमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र और तपरूप चार आराधनाओं के कथन का सार निश्चय और व्यवहार दोनों रूप से दिया है।

4. **तत्त्वसार:** यह एक लघु अध्यात्म ग्रन्थ है, जिसमें 74 गाथाएँ हैं। इसमें बतलाया है कि जिसके न क्रोध है, न मान है, न माया है और न लोभ है, न शल्य है, न द्वेष है, न लेश्या है, जो जन्म-जरा-मरण से रहित है, वही निरंजन आत्मा है।

5. **लघुनयचक्र :** इस ग्रन्थ में 87 गाथाओं में नय का स्वरूप, उपयोगिता एवं इसके भेदों का सुन्दर वर्णन मिलता है।

6. **आलापपद्धति :** यह संस्कृत-गद्य में रचित छोटी-सी रचना है। इसमें गुण, पर्याय, स्वभाव, प्रमाण, नय, निक्षेप एवं अध्यात्म नयों का कथन किया गया है। यह ग्रन्थ दस अधिकारों में विभक्त है। इसके अलावा एक और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ श्रुतभवन दीपक नयचक्र है।